रिकॉर्डः– महफिल में जल उठी शमा..... ''ॐ शान्ति'' पिताश्री 6/10/1965

ॐ शान्ति। गीत का अर्थ बच्चों ने समझा। जिन्होंने यह गीत बनाए हैं वे इनका अर्थ नहीं जानते। देखो कितने वेद–शास्त्र–उपनिषद बनाए हैं; परन्तु एक भी यथार्थ अर्थ को नहीं जानते। यथार्थ अर्थ को न जानने कारण वेस्ट आफ टाइम, वेस्ट आफ एनर्जी, वेस्ट आफ मनी करते हैं। बाप समझाते हैं, तुमने बहुत–2 मंदिर, वेद–शास्त्र–उपनिषद बनाए हैं, यज्ञ–तप–जप किए हैं, कितना पैसा खर्चा किया। तो बाप किसको समझाते हैं? जो जीते जी मर कर बाप के बच्चे बनते हैं। तो बाबा के बनते हो गोया तुम जीते जी मरे हो न। तो अब बाप के साथ चलने की तैयारी करनी है। यह नहीं कि वहाँ तुम्हारा कोई बर्थ डे या एनिवर्सरी मनाएँगे। नहीं। यहाँ देखो जैसे गाँधी का कितना धूमधाम से मनाते हैं। तो वहाँ पर ऐसे नहीं होगा कि अभी शिवबाबा ज्ञान देकर चला जावेगा तो तुम फिर सतयुग में उनकी जयन्ती मनाएँगे, जैसे भक्तिमार्ग में मनाते आते हैं। भक्तिमार्ग में शिवजयन्ती

मनाते हैं न। तो आधा कल्प जो भी शरीर छोड़ेंगे तो उनकी एनिवर्सरी नहीं करेंगे। गऊ दान करना, पितृ खिलाना आदि नहीं होगा; क्योंकि दान किया जाता है कि दूसरे जन्म में मिले। सतयुग में तो तुम इस समय की प्रालब्ध खाते हो। तो भक्तिमार्ग के रसम–रिवाज़ और ज्ञानमार्ग के रसम–रिवाज़ में कितना अंतर है। जो भी विशाल बुद्धि है वह इन बातों को समझेंगे और जो कल्प पहले विशाल बुद्धि बने होंगे वही अब बनेंगे; क्योंकि यह फिर से वही पार्ट बजना है। गीत सुना न कि चारों तरफ ल(गाए) फेरे फिर भी हरदम दूर रहे। तो बाप कहते हैं तुमने भक्तिमार्ग में कितना माथा मारा है फिर भी मुझे मिल न सके; क्योंकि जब मैं आऊँ तभी तो तुम मुझे मिल सको न। मैं आता ही हूँ कल्प–2 संगमयुगे। फिर वह कह देते कि परमात्मा युगे–2 आता है। फिर कहते परमात्मा 24 अवतार लेता है। तो यह रॉंग हो गया न। मुझे बुलाते भी हैं कि पतित–पावन आओ, आकर पतितों को पावन बनाओ। तो अभी तुम्हारी युद्ध है माया रावण से। **"We are at war with ravana"** (हम रावण के साथ युद्ध कर रहे हैं) तुम्हारी कोई स्थूल वार नहीं है। तुम रावण पर जीत पहनते हो। उसमें भी योद्धा कौन है? काम। तो इस विकार पर जीत पहननी है अर्थात पवित्र बनना है। जब खुद पवित्र बनें तो बच्चों को भी बनाना पड़े। ताकि वे भी विश्व के मालिक बन जायँ। अगर अभी तुम उनको वर्सा देवे तो क्या देंगे, ठिक्कर–ठिब्बर ही देंगे। अच्छा देखो, अमेरिका है। वो क्या है! ठिक्कर–ठोब्बर ही है न; क्योंकि अब सब खत्म हो जाने हैं। अभी देखो मरेंगे कैसे? जैसे जब पहाड़ों पर रात को बर्फ का तूफान आता है तो पंछी आदि सब खतम हो जाते हैं। तो यह बॉम्ब्स के तूफान भी ऐसे हैं, एकदम मरते जावेंगे मच्छरों सदृश्य। तुम जानते हो कि हम देखेंगे कि सब कैसे मरेंगे और मर भी रहे हैं। लड़ाई में देखो कितने मरते हैं। यहाँ तो मौत सबके सिर पर खड़ा है। सतयुग में मौत का भी डर नहीं होगा; क्योंकि वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होती। जो बाप ऐसी दुनिया में ले जाते हैं तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए न। यह सुप्रीम टीचर भी है। तो पढ़ाई पर पूरा ध्यान भी देना चाहिए। कई हैं जिन्हों को पढ़ाई का कदर नहीं है। अगर समझो, कोई सख्त बीमार है, मरने पर है, उसको भी क्लास में लाकर लिटाना चाहिए। गीत भी है ना ज्ञान अमृत मुख में हो, गंगा का कंठा हो तब प्राण तन से निकले। तो पढ़ाई का इतना कदर चाहिए। अगर लाचारी हालत में नहीं ले आ सकते तो घर में भी याद दिलाना चाहिए; परन्तु पढ़ाई पर बहुतों का ध्यान नहीं है। बाबा कहते हैं रजिस्टर ले आओ तो मुझे उससे मालूम पड़ जाय कि कहाँ तक कौन पढ़ता है और फिर बाबा पूछते हैं कि यह खुद पढ़ता है और दूसरों को पढ़ाता है? क्योंकि हम ब्राह्मणों का अब धंधा ही यह है पढ़ कर पढ़ाना। इसमें ही कमाई है, बाकी धंधों में है धूल। उन ब्राह्मणों के कच्छ में है कुरम, तुम्हारी कच्छ में है सच। सचखण्ड की स्थापना कर रहे हैं। तुम्हारे ऊपर बड़ी रेस्पॉन्सिबिलिटी है; इसलिए बड़ी खबरदारी रखनी है। मेहनत है, पढ़ना और पढ़ाना है। ऐसे नहीं कि सारा दिन पढ़ना–पढ़ाना है। नहीं; क्योंकि तुम प्रवृत्तिमार्ग वाले हो। घर का भी काम भले 8 घण्टा करो। गवर्मेन्ट ने भी कायदा निकाला है न 8 घण्टा काम करो। आगे तो सारा–2 दिन भी करते रहते थे। जब स्टीमर बाहर से रात को आते थे तो सारी–2 रात भी दुकान खोल कर बैठते थे; परन्तु अब गवर्मेन्ट ने 8 घण्टे का कायदा निकाला है। तो तुमको भी इस सर्विस में अवश्य लगना है। घर का काम कर फ़ारिग हो फिर इस सर्विस में लग जाना है। यह सर्विस करना गवर्मेन्ट स्वयं सिखलाती है। वहाँ भी गवर्मेन्ट मिलिट्री आदि को सिखलाती है न। खिलाती–पिलाती भी है, फिर वह उनकी सर्विस करते हैं ना। तो यहाँ भी तुमको बाप सिखाते हैं **'We are on godly service only'** तो तुमको गॉडली सर्विस करनी है। सिर्फ ओनली गॉडली सर्विस नहीं। ओनली हो गई सिर्फ अपनी बुद्धि की और खुद को पवित्र बनाना। हमको तो भारत को स्वर्ग, हेविन बनाना है तो इस सर्विस में लग जाना है; क्योंकि तुम्हारे ऊपर बड़ी रेस्पॉन्सिबिलिटी है। जैसे चीफ कमाण्डर, कैपटेन आदि पर और ही अधिक जवाबदारी रहती है। यहाँ भी ऐसे हैं। जो अच्छे–2 बच्चे सेन्टर खोलते हैं वो हो गए कमाण्डर। इस युद्ध का मार्शल है शंकर। कहते हैं शंकर ने आँख खोली तो खतम। बाप विनाश नहीं करते,

करवाते हैं। तो इन बच्चों पर जवाबदारी ठहरी न। तो यह हर एक को अपन को देखना है कि हम सर्विस के बजाय डिससर्विस तो नहीं करते हैं। एक तो सन्यासी बाप से बेमुख करते हैं, दूसरे कहीं–2 अपने बच्चे भी बाप से बेमुख कर देते। जैसे आज तो पढ़ते रहे और बाप का परिचय भी देते रहे और फिर अगर बाद में पढ़ाई न पढ़े और धारणा न करे तो फिर दूसरों को कह न सके कि पढ़ाई पढ़ो। बहुत हैं जो भाई–बहनों से रूठ पढ़ाई छोड़ देते हैं। यह नहीं समझते कि पढ़ाई छोड़ने से गुरु के निन्दक बन जाते हैं। गोया औरों को भी बाप से बेमुख करने अर्थ निमित्त बन पड़ते। तो कहते हैं गुरु के निन्दक ठौर न पाय। तो सतयुग में ऊँच पद पा न सके। यहाँ बाबा रजिस्टर मँगाते हैं तो उससे समझ जाते हैं, जैसे स्कूल में माँ–बाप, टीचर रजिस्टर से ही समझ जाते हैं कि बच्चा कहाँ तक पढ़ता होगा। कई बच्चे ऐसे होते हैं जो सारा दिन खेलते–कूदते रहते और स्कूल की छुट्टी के टाइम पर घर आ जाते कि हम स्कूल पढ़ कर आया। कई के माँ–बाप तो फिर रजिस्टर भी नहीं देखते तो उनको मालूम भी नहीं पड़ता। कइयों के माँ–बाप रजिस्टर देखते हैं और ध्यान रखते हैं तो बच्चे अच्छे पढ़ जाते और यहाँ शिवबाबा तो अन्तर्यामी है। इस साकार को तो रजिस्टर दिखाना पड़े न। बच्चे कहते हैं ऐसे–2 तूफान आते हैं। बाबा कह देते कि तूफान तो मेरे पास पहले आते हैं; क्योंकि जब तक इसको अनुभव न हो तब तक बच्चों को कैसे समझा सके। अच्छा चलो, तुमको माया सारी रात भी हैरान किया, नींद भी न करने दी, टाइम भी वेस्ट किया, यह तो उसका फर्ज है, टकराएगी ज़रूर। बाकी तुम्हारा काम है फिर बाप को उतना ही याद करना। याद कर उस कमी को भर देना; परन्तु कई बच्चे हैं जो ज़रा सी भी माया आई तो बस चले जाते हैं। जैसे वैद्य लोग कह देते हैं कि दवाई लेने से बीमारी उथलेगी; परन्तु कई ज़रा सी बीमारी ने उथल खाई तो उस डॉक्टर को छोड़ देते हैं, दूसरे के पास चले जाते हैं। तो यहाँ भी ऐसे हैं कि ज्ञान को छोड़ भक्तिमार्ग के साधु–संतों पास चले जाते हैं। फिर कह देते कि यह किसी और ने कहा कि गृहस्थ व्यवहार में रहते, शादी करके पवित्र बनो। यह कौन–सी नई मुसीबत है? किसी और ने तो ऐसा कहा नहीं। अरे, तुम कहते हो न कि हमको राजा जनक मिसल गृहस्थ में रहते जीवन मुक्ति चाहिए। तो प्रवृत्ति में तो रहना पड़े न। कई फिर कह देते कि बात तो ठीक है। बाकी ऊँची मंज़िल है ऐसा कह डर जाते। अरे, ऊँच तो जाना ही है न। देखो दिलवाला मंदिर में भी है न कि नीचे तपस्या कर रहे हैं और ऊपर में उनको प्रालब्ध स्वर्ग है तो ऊँची मंज़िल तो है ही। कहते भी हैं चढ़े तो चाखे वैकुण्ड रस, गिरे तो चकनाचूर। इसलिए बड़ी सावधानी से चलना पड़ता है, डरना नहीं होता। कहते हैं यह गीता का अथॉरिटी है। तो गीताएँ तो आजकल अनेक हैं– टैगोर गीता, गाँधी गीता आदि... आजकल तो जो घर से रूठते वह गीता का अर्थ कर देते और अपना नाम डाल देते हैं। एक गीता में लिखा है बैंगन खाने से यह होगा, तौरी खाने से यह होगा। यह (ब्रह्मा) रोज़ाना गीता पढ़ते थे। कहाँ भी जाते थे, चाहे राजाओं पास भी जाते थे, गीता का पाठ ज़रूर करते थे। तो मनुष्य समझते थे यह भक्त हैं। मनुष्य समझते हैं कि भक्त ठगते नहीं हैं; परन्तु भक्त जितना ठगते हैं उतना और कोई नहीं; क्योंकि भक्ति में है ही करप्शन, एडल्ट्रेशन। पढ़ाई को नहीं छोड़ना है, नहीं तो माया अजगर खा जावेगा और अंत में पछताना पड़ेगा। जब धर्मराजपुरी में एक–2 जन्म का साक्षात्कार कराते जाते हैं और सज़ा देते जाते हैं। बाबा ने समझाया है न, जब काशी कलवट खाते थे मुक्ति के लिए। जीवनमुक्ति को तो कोई जानते ही नहीं; क्योंकि वह समझते हैं कि सुख कागविष्टा समान है। तो समझते हैं स्वर्ग के सुख भी ऐसे हैं। समझते हैं त्रेतायुग में भी तो सीता चुराई गई, वह भी तो दुख है। अब तुम सारी बात को जानते हो कि सतयुग यह बातें नहीं थीं। यह भारत की ही कहानी है। बाकी तो और धर्म वाले इस ड्रामा अन्दर बाइप्लाट है। ड्रामा में भी बाइप्लाट होते हैं न। भारतवासियों के ही 84 जन्म हैं। और धर्म वाले तो 84 जन्म नहीं लेते। जो सूर्यवंशी बनते हैं वह ही 84 जन्म लेते। कहते हैं न– आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल... इसके अर्थ को भी तुम अब जानते हो। भक्त तो सिर्फ गाते रहते हैं, जानते कुछ भी नहीं। यह ब्रह्मा भी तो भक्त था न। इसने भी

कित(ना) गुरु किया था; परन्तु हैं सब ठग। तभी .... को बाप कहते हैं सर्वधर्मान्... तो वह थोड़े ही जानते। भले गीता आदि पढ़ते हैं; परन्तु है जंगली तोते। तुम्हीं अब कण्ठी वाले बन विजय माला में पिरोय जावेंगे। दुनिया भला इन बातों को क्या जाने! उनको तुम अगर लिटरेचर दो तो वह पढ़ कर फेंक देते। जैसे बंदर को रत्न दो तो फेंक देते, अगर चने दो तो खा लेते। यह बंदर भी क्या जाने ज्ञान रत्नों को। तुम बच्चे, जो कल्प पहले देवता धर्म के थे, वही अब ब्राह्मण बने हैं। जो अभी ..... नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। और तो देवता बन ..... यह सैपलिंग लग रहा है न। वह गवर्मेन्ट तो काँटों का सैपलिंग लगा(ते)। यहाँ पाण्डव गवर्मेन्ट देवता धर्म का सैपलिंग लगाती। कितना फर्क है! जब देवता धर्म का सैपलिंग पूरा होगा तो पुरानी दुनिया का विनाश हो जावेगा। विनाश के आसार तुम बच्चे देख ही रहे हो, कैसे यवनों और कौरवों की लड़ाई लगती है। ड्रामा अनुसार नथिंग न्यू। नहीं तो क्यों कहा कि रक्त की नदी बहेगी। कोई हिन्दू थोड़े ही आपस में लड़ेंगे। यह लड़ाई है ही यवनों और कौरवों की और हम भी इस समय युद्ध पर है। यू आर एट वार विद रावण। जैसे वहाँ भी कमाण्डर देखते रहते हैं न कि लड़ाई ठीक तरह चल रही है या नहीं। कोई ट्रेटर तो नहीं बन गया। ट्रेटर के लिए बहुत बड़ी सज़ा होती है। तो यहाँ भी ऐसे हैं। अगर कोई बाप का बनकर फिर ट्रेटर बन जाते तो धर्मराजपुरी में उनको बहुत ब.... सज़ा मिलती है, चमड़ी उधेड़ते हैं। यह भी बच्चों ने साक्षात्कार किया है तो काशी (कलवट) की बात बताई न। जब बलि चढ़ते हैं तो उस समय अनेक जन्म के पापों की सज़ा भोगते हैं और फिर दूसरे जन्म में नए सिर (कर्म) शुरू होते हैं। मुक्ति में तो कोई जाते नहीं। कहते हैं फलाना पार निर्वाण गया। वह है तो सब झूठ। कहते हैं न पतित–पावन आओ, सबका सद्गति दाता एक। समझ की बात है न। बाप जब आते हैं तो कइयों को गति, कइयों को सद्गति देते हैं। परमात्मा ने अब ऑर्डर निकाला है पवित्र बनो। फिर कहते दुनिया कैसे चलेगी? अरे मुर्दे, तुम कहते हो न अब खाने को नहीं है। प्रजा कम होनी चाहिए। कभी–2 बच्चों को यह ख्याल आता है ऐसे करते तो ऐसा होता अच्छा होता। यह ख्याल आना ही नॉनसेन्सपना है। ड्रामा के पटरी पर पूरी नहीं रहते तो ऐसे–2 कहते रहते हैं। अच्छा, मीठे–2 बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ